Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (First Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNA 101

Paper Title: Sampreshan Kaushal

Unit: 1

Module Name: Visheshan

Module No: 04

Name of the Presenter: Ms. Tanuja Gaunkar

Notes

विशेषण का स्वरूप -

अगर हम कहें 'फूल' तो इस शब्द में संसार के सारे फूलों का जीक्र हम कर रहे है । किसी भी स्थान पर कोई भी फूल हो सकता है, किसी भी रंग का हो सकता है, कैसी भी सुगंध का हो सकता है, किसी भी आकार का हो सकता है पर वह फूल है । पर अगर हम यह कहें कि 'पीला फूल' तो ऐसा कहने से सभी रंग के फूल निकल जाऐंगे सिर्फ पीला ही फूल रहेगा । पीला रंग फूल की व्यापकता मर्यादित कर देता है । पीला शब्द फूल की विशेषता बता रहा है ।

जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है उसे विशेषण कहते हैं , जैसे बड़ा, काला, दयालु, भारी, एक, दो, सब । संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण-दोष, रूप-रंग, आकार-प्रकार) बतानेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जिस संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताई जाए, उसे विशेष्य कहते हैं।

उदाहरण - 1) सफेद घोड़ा घास चर रहा है।

2) अनीता सुन्दर कन्या है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'सफेद', 'सुन्दर' शब्द किसी की विशेषता बताते हैं, इसलिए यह विशेषण है और जिसकी यह विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। उपर्युक्त वाक्यों में 'घोड़ा', 'अनीता' विशेष्य हैं।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता हैं उसे विशेषण कहते हैं। जो किसी संज्ञा की विशेषता बताये उसे विशेषण कहते हैं। दूसरे शब्दों में विशेषण एक ऐसा विकारी शब्द है, जो हर हाल में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है।

जैसे - 1) राम अच्छा लड़का है।

2) शीला अच्छी लड़की है।

विशेषण के प्रकार -

विशेषण के निम्नलिखित प्रकार हैं - (1) गुणवाचक विशेषण, (2) संख्यावाचक विशेषण, (3) परिमाणवाचक विशेषण, (4) संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण।

1) गुणवाचक विशेषण -

गुणवाचक विशेषणों की संख्या और सब विशेषणों की अपेक्षा अधिक रहती है । इनके कुछ मुख्य अर्थ नीचे दिए जाते हैं -

काल- नया, पुराना, ताजा, भूत, वर्तमान, भविष्य, प्राचीन, अगला, पिछला, मौसमी, आगामी, टिकाऊ इत्यादि ।

स्थान - लंबा, चौड़ा, ऊँचा, नीचा, गहरा, सीधा, सँकरा, तिरछा, भीतरी, बाहरी, ऊजड़, स्थानीय इत्यादि ।

आकार - गोल, चौकोर, सुड़ौल, समान, पीला, सुंदर, नुकीला इत्यादि ।

रंग - लाल, पीला, नीला, हरा, सफेद, काला, बैंगनी, सुनहरी, चमकीला, फीका इत्यादि ।

दशा - दुबला, पतला, मोटा, पिघला, गाढ़ा, गीला, सूखा, घना, गरीब, पालतू, रोगी इत्यादि ।

गुण - भला, बुरा, उचित, अनुचित, सच, पापी, दानी, न्यायी, दुष्ट, सीधा, शांत इत्यादि ।

जिन शब्दों से संज्ञा के गुण-दोष, आकार-प्रकार, रुप-रंग आदि को जाना जाता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं या जो विशेषण किसी संज्ञा के गुण का बोध कराता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - अच्छा, बुरा, सच्चा, झूठा, सुंदर, असुंदर आदि।

(1) लाल घोड़ा दौड़ता है।

(2) वह बहुत चतुर लड़का है।

(3) यह लम्बा-चौड़ा मैदान है।

(4) सूखा पत्ता गिरता है।

(5) बहुत ऊँचा मकान है।

इन वाक्यों में लाल, चतुर, लम्बा-चौड़ा, सूखा, ऊँचा ये शब्द घोड़ा, लड़का, मैदान, पत्ता, मकान के गुण का बोध कराते हैं। इसलिए इसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

2) संख्यावाचक विशेषण -

जिस विशेषण शब्द से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। या जब किसी गणना, वस्तुओं की संख्या संबंधी विशेषता बताई जाती है तो उसे संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है।

जैसे - (1) राम ने दस लड्डू खाए।

(3) राज दसवीं कक्षा में पढ़ता है।

यहाँ दस और दसवीं संख्यावाचक विशेषण है, जो लड्डू तथा कक्षा की विशेषता बता रहे हैं। संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं -

i. निश्चित संख्यावाचक विशेषण -

वे विशेषण शब्द जो विशेष्य की निश्चित (exact) संख्या का बोध कराते हैं, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

जिस विशेषण शब्द से निश्चित संख्या का बोध होता है, निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाता है, जैसे - तीन, चार, पाँच, ग्यारहवाँ, अठारह इत्यादि।

उदाहरण -

(1) मेरी कक्षा में चालीस छात्र हैं।

(2) कमरे में एक पंखा घूम रहा हैं। (3) डाल पर दो चिड़ियाँ बैठी हैं।

इन सभी वाक्यों में विशेष्य की निश्चित संख्या का बोध हो रहा है।

ii. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण -

वे विशेषण शब्द जो विशेष्य की निश्चित (exact) संख्या का बोध न कराते हो, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे - कई, सब, कुछ, अनेक, थोड़े आदि।

उदाहरण -

(1) कक्षा में बहुत कम छात्र उपस्थित थे।

(2) कुछ फल खाकर ही मेरी भूख मिट गई।

इन वाक्यों में विशेष्य की निश्चित संख्या का बोध नहीं हो रहा है।

3) परिमाणवाचक विशेषण -

परिमाणबोधक विशेषणों से किसी वस्तु की नाप या तौल का बोध होता है, जैसे, और , सब, सारा, समूचा, अधिक, बहुत, बहुतेरे, कुछ, कम, थोडा, पूरा, अधूरा, यथेष्ट इत्यादि ।

जिस विशेषण शब्द से किसी चीज या वस्तु की मात्रा, नाप या तोल का बोध होता है तो उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - दो किलो, छह मीटर चौड़ा, थोड़ा पानी, हल्का लोटा, आधा किलो, थोड़ा- बहुत इत्यादि।

परिमाणवाचक विशेषण के प्रकार दो होते हैं- 1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण और 2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

(1) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण -

निश्चित परिमाण बताने के लिये संख्यावाचक विशेषण के साथ परिमाण बोधक संज्ञाओं का प्रयोग किया जाता है, जैसे, दो सेर घी, चार गज मलमल, दस हाथ जगह इत्यादि ।

जो विशेषण शब्द किसी वस्तु की निश्चित मात्रा अथवा नाप-तोल का बोध कराते हैं, वे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे -

(1) चार किलो चावल।

(2) ट्रक में 20 टन गेहूँ था।

(2) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण - जो विशेषण शब्द किसी वस्तु की निश्चित मात्रा अथवा नाप-तोल का बोध नहीं कराते हैं, वे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - (1) मुझे थोड़ा-सा पानी चाहिए। (2) एक तालाब में लिटरों पानी भरा है।

4) **संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण -**

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की ओर संकेत करते है या जो शब्द सर्वनाम होते हुए भी किसी संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता को प्रकट करें, उन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।
दूसरे शब्दों में जो सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे - (1) यह बच्चा रोता है।

(2) वह कुत्ता काटता है।

(3) वह नौकर जाएगा।

(4) यह लड़की अच्छी है।

(5) वह लड़का पढ़ता है।

इन उदाहरणों में यह, वह सर्वनाम बच्चा, कुत्ता, नौकर, लड़की, लड़का संज्ञा के साथ आया है इसलिए ये सार्वनामिक विशेषण हैं।